Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

# बहुविषयक कार्यक्रम की पाठ्यक्रम की रूपरेखा: जेंडर अध्ययन के संदर्भ में


| | |
|---|---|
| अनिता कुमारी | शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर. |
| प्रोफेसर प्रताप सिंह राणा | डीन, शिक्षा संकाय, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर. |



**ABSTRACT:**

बहुविषयक कार्यक्रम की पाठ्यक्रम की रूपरेखा जेंडर अध्ययन के संदर्भ में रखने का आशय है कि जेंडर स्टडी को सशक्त बनाया जाए। बहुविषयक पाठ्यक्रम एक तरह से संकाय अध्ययन है इसमें कई विभाग जुड़े रहते हैं ।इसमें जेंडर मुद्दे का समावेशन होने से बालिका शिक्षा के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण भी होगा। जेंडर अध्ययन को प्रत्येक मानविकी विषयों के एक पेपर के रूप में रखा जा सकता है, जिसमें परिचयात्मक रूपरेखा, सामाजिक आयाम, आर्थिक आयाम, राजनीतिक एवं कानूनी आयाम, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, समकालीन मुद्दे एवं रणनीतियां के साथ-साथ शोध, प्रोजेक्ट एवं सामुदायिक कार्य तथा सशक्तिकरण कार्यक्रम के रूप में पाठ्यक्रम संरचना का निर्माण किया जा सकता है। महिला अध्ययन या नारीवादी आंदोलन के फलस्वरुप हुए परिवर्तन को जेंडर स्टडी में प्रतिमान विस्थापन के तौर पर मना जाता है। प्रतिमान विस्थापन कई क्षेत्र में हुआ है। जनगणना, लिंगानुपात, मानव विकास सूचकांक, पुरुष लेखको का महिलावादी नजरिया सब कुछ प्रतिमान विस्थापन को दर्शाता है। जेंडर अध्ययन का एक छुपा पाठ्यक्रम के रूप में सभी विषयों में होने से कक्षा में सह शिक्षा सर्व सुलभ हो सकेगी। सह पाठ्यगामी क्रियाओं से भी जेंडर विभेद समाप्त हो जाने से पाठ्यक्रम की निरपेक्ष रूपरेखा विकसित होगी ।अतः बहुविषयक कार्यक्रम की पाठ्यक्रम की रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप निर्धारित होने के साथ-साथ इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा को जेंडर अध्ययन के संदर्भ में बनाने की महती आवश्यकता है।



**KEYWORDS:**

**बहुविषयक, पाठ्यक्रम, प्रतिमान विस्थापन, जेंडर स्टडी, मानविकी.**


## प्रस्तावना

बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम की ओर प्रेरित करने वाली रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 11 का मुख्य शीर्षक है। इस पाठ्यक्रम रूपरेखा में जेंडर अध्ययन जैसा विषय भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बहुविषयक पाठ्यक्रम संकाय अध्ययन है, जिसमें कई विभागों को एक साथ स्थान दिया जाता है। ऐसे में जब समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, साहित्य, राजनीति, इतिहास जैसे सांस्कृतिक अध्ययन अध्यापन पर बल दिया जा रहा है। इस अध्ययन में जेंडर अध्ययन भी एक ज्वलंत मुद्दा है, क्योंकि जेंडर अध्ययन के लिए कोई अलग से पाठ्यक्रम विकसित करना कठिन कार्य है। परंतु जेंडर मुद्दे का समावेशन सभी प्रकार के विषयों में होना भी अनिवार्य है[1]। इसलिए बहुविषयक पाठ्यक्रम में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से जेंडर मुद्दों को रखना चुनौती पूर्ण जरूर है, परंतु महिलाओं की दशा एवं दिशा में सुधार हेतु शैक्षिक प्रस्थापना करने हेतु ऐसे पाठ्यक्रम को रखना कारगर साबित होगा। यहां जेंडर अध्ययन पाठ्यक्रम की एक सामान्य रूपरेखा शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत की जा रही है और उम्मीद है कि यदि अलग से नहीं लेकिन एक पेपर के रूप में ऐसे अध्ययन को सभी विषयों में समाहित करने से महिला शिक्षा के प्रति एक सकारात्मक एवं कारगर प्रयास हो सकता है और महिला सशक्तिकरण को गति एवं दिशा भी मिल सकती है।

## जेंडर अध्ययन पाठ्यक्रम की रूपरेखा

### 1. परिचयात्मक रूपरेखा

जेंडर एवं समाज एक परिचय

लिंग की अवधारणा

नारीवाद उद्भव एवं विकास

बहुविषयक दृष्टिकोण और जेंडर

### 2. सामाजिक आयाम

जेंडर निर्धारण की सामाजिक संरचनाए परिवार, समाज, और कुटुंब

धर्म एवं जेंडर

कला एवं जेंडर

साहित्य एवं जेंडर

मीडिया एवं जेंडर

**3.आर्थिक आयाम**

जेंडर एवं कार्य स्थल की चुनौतियां

जेंडर बजटिंग

विकसित देश एवं महिला

विकासशील देश एवं महिला

ग्रामीण विकास एवं महिला

शहरी विकास एवं महिला

पंचायती राज कानून एवं महिला

**4. राजनीतिक एवं कानूनी आयाम**

जेंडर एवं कानून

मानवाधिकार कानून

घरेलू हिंसा

महिला आरक्षण

महिला सशक्तिकरण

महिला शिक्षा एवं सरकारी योजनाएं

बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति

जनसंख्या नियंत्रण कानून

परिवार नियोजन कानून

भ्रूण हत्या का प्रभाव एवं परिणाम

**5. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य**

प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति

औपनिवेशिक काल में महिलाओं की स्थिति

स्वतंत्रता संग्राम एवं जेंडर

समकालीन भारत में जेंडर की भूमिका

**6. समकालीन मुद्दे एवं रणनीतियां**

समुदाय एवं जेंडर

ट्रांसजेंडर परिभाषा अधिकार एवं अस्तित्व की चुनौतियां

**7. शोध एवं प्रोजेक्ट कार्य**

क्षेत्रीय अध्ययन और केस स्टडी

जेंडर आधारित नीतियों का विश्लेषण

सामुदायिक कार्य और सशक्तिकरण कार्यक्रम

**8. सामुदायिक कार्य एवं सशक्तिकरण कार्यक्रम**

सरकारी योजनाएं

आंगनवाड़ी

स्वयं सहायतासमूह।

समस्त विश्व के संदर्भ में नारीवादी आंदोलन की शुरुआत 19वीं शताब्दी में होती है। भारत में भी नारीवादी आंदोलन के तीन सोपान हैं। एक, 19वीं शताब्दी एवं स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान दूसरा, आजादी के बाद 1960 के दशक तक और तीसरा 1970 के बाद का नारीवादी आंदोलन। वास्तव में पहले चरण से ही भारतीय महिलाओं ने भी स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय भागीदारी निभाने शुरू कर दिया था और दूसरे चरण में राजनीतिक सक्रियता और भी बलवती होती है। परिणामस्वरूप 1970 के दशक के बाद महिला सशक्तिकरण भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का केंद्र बिंदु बन गया ।इसके परिणाम स्वरूप महिला अध्ययन ,महिला सशक्तिकरण, नारीवाद ,जेंडर इत्यादि मुद्दे शिक्षा के माध्यम से सभी विषयों के पाठ्यक्रम में प्रमुखता से स्थान पाते हैं।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 में समावेशी शिक्षा एवं अध्याय 11 में बहुविषयक शिक्षा की ओर का संकल्प दोहराया गया है। इसलिए समग्र शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा में जेंडर स्टडी का पाठ्यक्रम बहुत जरूरी हो जाता है।

## महिला अध्ययन का जेंडर अध्ययन में प्रतिमान विस्थापन

कोठारी शिक्षा आयोग ने उच्च शिक्षा में महिला अध्ययन की बात रखी थी।वही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में महिला सशक्तिकरण के तहत बालिका शिक्षा का प्रबल पक्ष रखा गया[2]। और अब सर्व शिक्षा अभियान, शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के बाद एक लंबे अरसे से इंतजार के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पाठ्यक्रम में आधारभूत परिवर्तन की उम्मीद जगी है। इस तरह वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आधारभूत संरचना में होने वाले परिवर्तन को प्रतिमान विस्थापन कहा जाता है। प्रतिमान विस्थापन शब्द का प्रयोग किसी प्रतिमान या मॉडल या सिद्धांत का समय के साथ परिवर्तन आने एवं एक नए सिद्धांत की प्रस्तावना होती है[3]। अस्तु अब समय आ गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के को पूर्णरुपेण लागू होने के साथ-साथ हमारे शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यक्रम निर्माण का अवसंरचनात्मक कार्य भी हो, इस बाबत बहुविषयक पाठ्यक्रम में जेंडर स्टडी जैसे ज्वलंत मुद्दे को एक अनिवार्य पेपर के रूप में सभी विषयों के साथ रखा जाए ताकि निकट भविष्य में समावेशी समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो सके।

महिलाओं से जुड़े मुद्दे ने विस्तार पाया है ।इसलिए यह भी प्रतिमान विस्थापन है। जैसे वर्तमान में जनगणना में केवल लिंगानुपात की ही बात

नहीं हो रही है अपितु ग्रामीण महिला, शहरी महिला, अमीर घर की महिला,गरीब घर की महिला इत्यादि दृष्टिकोण से भी महिलाओं की स्थिति का आकलन हो रहा है[4]। महिला अध्ययन में प्रतिमान विस्थापन का एक पैमाना मानव विकास सूचकांक भी है इसमें जन्म पर जीवन प्रत्याशा के साथ-साथ शैक्षिक स्थिति भी एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। महिला अध्ययन में प्रतिमान विस्थापन शिक्षण में शोध के नजरिए से भी हो रहा है। अब केवल महिला ही महिला आयोग में नहीं रहेगी बल्कि कुछ पुरुष बुद्धिजीवी भी रखे जा सकते हैं ।अर्थात महिला को महिलाओं के नजरिए से ही नहीं बल्कि पुरुषों के नजरिए से भी देखना जरूरी है इसे नारीवादी या फेमिनिस्ट दृष्टिकोण भी कहते हैं ।अतः फेमिनिस्ट दृष्टिकोण में नयापन आया है इस प्रकार महिला अध्ययन पाठ्यक्रम बहुत बृहदता प्राप्त कर रहा है। अब समाज की संरचना में महिला और पुरुष दोनों की भागीदारी बराबर बराबर है ।महिलाओं की स्थिति में पुरुष का नजरिया भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि किसी महिला का ।इसलिए यदि पाठ्यक्रम में जेंडर अध्ययन को मजबूती से रखा जाएगा तो समाज में दोनों की भागीदारी बराबरी के रूप में दर्ज हो सकेगी।

## जेंडर अध्ययन के छुपा पाठ्यक्रम की रूपरेखा

स्कूली शिक्षा में पाठ्यक्रम एक तरह की नौका के समान है जिस पर चलकर शिक्षक एवं छात्र कोर्स को पूरा करते हुए वर्तमान डिग्री वाली शिक्षा पूरी करता है।जेंडर अध्ययन के लिए छुपा पाठ्यक्रम रखने का आशय यह है[5] कि सभी विषयों में जेंडर स्टडी नाम का कोई पेपर रखने पर यदि सहमति नहीं बनेगी, फिर भी जेंडर स्टडी छात्रों को करनी पड़ेगी।इसलिए जेंडर अध्ययन को एक छुपा पाठ्यक्रम के रूप में परंपरागत पाठ्यक्रम के विषय वस्तु के रूप में रखने का कार्य सभी स्तर के पाठ्यक्रम तथा सभी विषयों के पाठ्यक्रम में रखने से अप्रत्यक्ष रूप से जेंडर के प्रति छात्रों के मन मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जेंडर अध्ययन का पाठ्यक्रम छुपा रूप से एक दूसरे तरीके से और भी हो सकता है जैसे कक्षा व्यवस्था, अनुशासन, शिक्षक के व्यवहार, खेल के मैदान, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि में जेंडर अध्ययन को रखा जाए।दूसरे शब्दों में कक्षा व्यवस्था में बैठने के स्थान को निश्चित करने से जेंडर विभेद खत्म होता है।शिक्षक का व्यवहार खास कर उसके द्वारा पूछे गए प्रश्न उभय लिंगी भाषा में होना चाहिए। बालक एवं बालिका में अंतर करने वाले शब्दों का प्रयोग शिक्षक कतई ना करें खेल के मैदान में दोनों की शारीरिक बनावट के हिसाब से व्यवस्था करनी चाहिए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्राएं सबसे आगे रहती हैं, तो फिर जेंडर अध्ययन में बालिका शिक्षा और महिला शिक्षा का पक्ष उभरता है। कुल मिलाकर स्कूली पाठ्यचर्या में विविध प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन में किसी भी प्रकार का विभाजन नहीं करना चाहिए। इसे सह शिक्षा की प्रक्रिया के तहत पाठ्यक्रम में रखने से लैंगिक विभाजन की रूपरेखा समाप्त हो सकती है। सह शिक्षा जेंडर असमानता को खत्म करने का सबसे सशक्त माध्यम है। वास्तव में विभाजनकारी पाठ्यक्रम ही समाप्त कर देना चाहिए। छुपा पाठ्यक्रम और भी प्रभावी एवं कारगर साबित होगा जब स्कूल के बाहर भी यह सफल हो सके अर्थात लिंग का छुपा पाठ्यक्रम शब्द ही समाप्त हो जाए और सहपाठयगामी क्रियाओं में जेंडर विभेद समाप्त करने से एक निरपेक्ष पाठ्यक्रम की रूपरेखा विकसित हो सकेगी।

## निष्कर्ष

बहुविषयक कार्यक्रम की पाठ्यक्रम की रूपरेखा जेंडर अध्ययन के संदर्भ में रखकर शिक्षण की पाठ्यक्रम संरचना बनाने की महती आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक कार्यक्रम की ओर का संकल्प दोहराया गया है[6]। इसमें जेंडर अध्ययन को स्थापित करना चुनौती पूर्ण जरूर है। लेकिन जरूरत है। इसलिए शिक्षण व्यवस्था में इसे रखकर कार्य करना पड़ेगा। शिक्षण के दौरान शिक्षक एवं शिक्षिका जेंडर विभेद शब्दों का प्रयोग करने से कैसे बचें इसका भी ध्यान रखना जरूरी है। जैसे गतिविधियां अलग रखता हूं या रखती हूं ।नाम का प्रयोग करते हैं करती हैं । प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करता हूं करती हूं ।इत्यादि प्रश्नों में शिक्षक व शिक्षिका ने लिंग भरे शब्दों का प्रयोग अपने अनुसार ही तो किया इसी से बच्चों में लिंग के प्रति जो विचारधारा बनती है उसका निराकरण या निदान या बचाव करने का सबसे कारगर उपाय है कि पाठ्यक्रम में लैंगिक भाषा का प्रयोग बहुवचन के रूप में हो और पाठ्यक्रम में जेंडर अध्ययन का एक पेपर रखने से भी सभी शिक्षक व छात्र जेंडर के प्रति सापेक्ष दृष्टि रखने लगेंगे खासकर मानविकी विषयों में जेंडर स्टडी पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण आयाम है।

## REFERENCES


1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, ड्राफ्ट अध्याय 6 पृष्ठ 38
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986, ड्राफ्ट भाग 4, पृष्ठ 3
3. त्रिपाठी, प्रतिमा (2017) लिंग विद्यालय एवं समाज, अग्रवाल प्रकाशन आगरा, पृष्ठ 3
4. योजना पत्रिका, अंक 12,मार्च 2004, पृष्ठ 38, 8,योजना पत्रिका, अंक 50, अक्टूबर 2006 , पृष्ठ 7 से 61 तक कई लेख दृष्टव्य।
5. शर्मा ,सविता( 2018) लिंग विद्यालय एवं समाज, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ,198,199
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, ड्राफ्ट अध्याय 11 पृष्ठ 57

7. वार्षिक रिपोर्ट 2020-21(हिन्दी संस्करण पी डी एफ फाइल) भारत सरकार मानव संसाधन शिक्षा मंत्रालय, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग और उच्च शिक्षा विभाग।